Date 06/07/23
Rishav singh

Machiavelli : Human Nature and Religion
(मैकियावली) (1469–1527)
~~(Niccolo मैकियावली)~~

Page No: ....
Date: ....

परिचय :- मैकियावली का जन्म 1469 ई० में इटली के नगर फ्लोरेन्स में हुआ। उनके जन्म के समय इटली की स्थिति चिन्ता जनक थी। इटली को छोटे-छोटे राज्यों में बँटा हुआ था और ये राज्य आपस में लड़ रहे थे। सभी तरफ अस्थिरता थी।

मैकियावली को पुनर्जागरण (Renaissance) की संतान कहते हैं। पुनर्जागरण यूरोप का एक सांस्कृतिक आंदोलन था जो 14वीं शताब्दी से इटली में शुरू हुआ और बाद में यूरोप के अन्य हिस्सों में फैल गया। इस आंदोलन में चर्च का एकाधिकार समाप्त हो गया और धार्मिक शिक्षाओं की ~~अह~~ जगह मानवीय संवेदनाओं को प्रमुखता दी जाने लगी।

मैकियावली की दो प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।
(i) द प्रिंस (The Prince)
(ii) डिस्कोर्सेस ऑन लाइवी (Discourses on Livy)

मैकियावली को पहला आधुनिक विचारक कहा जाता है।

मैकियावली ने राजनीति और धर्म, नैतिकता को अलग करके देखा। मैकियावली ने अनुभव किया था कि इटली को अस्थिरता और असुरक्षा से मुक्ति दिलाने का एक ही साधन है- छोटे-छोटे स्वतंत्र राज्यों के अस्तित्व को मिटाकर संपूर्ण देश पर एक निरंकुश शासक का एक छत्र प्रशासन की स्थापना कर दी जाए।

(आधुनिक राजनीतिक विज्ञान का जनक
(मैकियावली))

(Human Nature A/C to Machiavelli): नाकारात्मक वर्णन किया है।

Page No: ______
Date: ______

मैकियावली के अनुसार मानव स्वभाव :-

मैकियावली ने अपनी प्रसिद्ध रचना 'The Prince' में मानव स्वभाव का वर्णन किया है उनके अनुसार लोग स्वभाव से बुरे होते हैं। लोग स्वभाव से इर्ष्यालु और महत्वकांक्षी होते हैं। (मैकियावली ने मानव स्वभाव को नाकारात्मक वर्णन किया है।

(i) मनुष्य में महत्वकांक्षी होता है।

(ii) मनुष्य में स्वतंत्रता की इच्छा भी होती है। वह अपने तरीके से रहना चाहता है। प्रत्येक व्यक्ति दूसरों पर शासन करना चाहता है।

(iii) मनुष्य पशु से अलग इसलिए है क्योंकि उसमें विवेक होता है। मैकियावली के अनुसार मानव स्वभाव से आक्रमक होता है।

(iv) मैकियावली के अनुसार यदि व्यक्ति के बुरे स्वभाव को राज्य दण्ड या कानून द्वारा नियंत्रित न करे तो राज्य में अराजकता फैल जाएगी। मैकियावली का मानना है कि मनुष्य जितना अराजक होगा उतना ही सरकार को निरंकुश भी होना होगा।

(v) व्यक्ति हर समय इस बात से डरा रहता है कि जो कुछ उसके पास है कहीं वह खो न जाए। किसी चीज को खोने के डर से ही व्यक्ति और अधिक पाने की इच्छा करता है। इसी संघर्ष को हम व्यक्ति - व्यक्ति एवं व्यक्ति राज्य के बीच देखते पाते हैं।

(vi) मैकियावली ने प्रशासक को सलाह दी है कि उसे सदैव ही इस बात को ध्यान में रखकर शासन करना चाहिए कि सभी व्यक्ति सामान्य तौर पर बुरे हैं एवं लोग एक दूसरे की संपत्ति एवं

जीवन को नुकसान पहुँचा सकते है। मैकियावली के अनुसार — "व्यक्ति अपने पिता की हत्या के अपराध को एक बार क्षमा कर सकता है परन्तु अपनी संपत्ति के अपहरणकर्ता को वह कभी भी क्षमा नहीं कर सकता है।"

(vii) मनुष्य स्वार्थ से भरा हुआ है। मनुष्य उसी समय तक प्रेम करते है जब तक उनका स्वार्थ सिद्ध होता है। (catered - स्वार्थ सिद्ध)

(viii) मैकियावली शासक को यह सिख देता है कि लोगों पर शासन भय से या धमकाकर किया जाए, न कि उसपर शासन प्रेम से या दया की भावना से हो।

मैकियावली ऐसा इसलिए सोचते है क्योंकि मानव अपनी इच्छा से कोई कार्य नहीं करता है, बल्कि वह धमकी या डर से कार्य करता है।

आलोचना :— मैकियावली और हॉब्स के विचार मिलते-जुलते है। दोनों ने मानव स्वभाव का बुरा चित्रण किया है; परन्तु किन्तु मनुष्य स्वभाव से इतना भी बुरा नहीं है जितना इसका वर्णन मैकियावली ने किया है। लोगों के अंदर सद्गुणों की कमी नहीं है।

यदि मनुष्य इतना ही स्वार्थी है तो राज्य का अस्तित्व संभव नहीं होता क्योंकि राज्य की उत्पत्ति लोगों के परस्पर सहयोग से ही हुई है।

मैकियावली के विचार तत्कालीन इटली के

संदर्भ में सही हो सकता है, क्योंकि वह खुद इसका भुक्त भोगी था; लेकिन आज के समय में यह विचार प्रासंगिक नहीं हो है।

निष्कर्ष :- मैकियावली के अनुसार शासक को यह स्वीकार करना चाहिए कि लोग स्वीक स्वार्थी एवं अंह अहंकारी हैं। इसी वजह से वह आह्वान / आवाह्न करते हैं कि शासक को राजनीति में नैतिकता से नहीं बंधना चाहिए।

राजनीति और नैतिकता सांप और नेवले की तरह है। एक आदर्श शासक वह है जो शेर की तरह ताकतवर एवं लोमड़ी की तरह चालाक हो। लोग उससे डरे, शासक को मनुष्यों पर शक्ति का प्रयोग करना चाहिए, क्योंकि मनुष्यों का बुरा स्वभाव कभी बदला नहीं जा सकता।

मैकियावली के धार्मिक विचार :- मैकियावली ने कहा इटली में जो चर्च है वह भ्रष्ट हो गया है इसलिए चर्च को या धार्मिक संस्थाएँ को राजनीति से दूर रहना है चाहिए; उन्हें राजनीति में दखल नहीं देना चाहिए। क्योंकि मैकियावली कहते हैं कि चर्च भ्रष्ट हो चुका है।

धर्मनिरपेक्षता :- धर्म को राजनीति में जगह नहीं देना चाहिए; राजनीति में धर्म को दखल नहीं देगा। धर्म एक व्यक्तिगत मामला है, इसमें राज्य को दखल नहीं देना चाहिए।

Page No:........
Date: ..../..../....

लेकिन राजा को यह दिखाना चाहिए कि वह धार्मिक है; जबकि वे उनको नहीं मानता है।

धार्मिक संस्थाओं को राजनीति से अलग रखना चाहिए; क्योंकि धर्म और राजनीति दोनो अलग-अलग है।

मैकियावली का धर्म एवं नैतिकता पर विचार :-

मैकियावली शासक से कहते है कि उसे शासन करते समय सम्पूर्ण राष्ट्र का हित देखना चाहिए. उसे राज्य की सुरक्षा करनी चाहिए और यदि ऐसा करने में उसे अनैतिक मार्ग अपनाना पड़े तो भी पीछे मुड़कर नही देखना चाहिए। उसे राज्य के हित में जो भी उचित लगे, नैतिक अथवा अनैतिक वो सब सही है।

नैतिकता का प्रश्न शासक के लिए नही बना।

यह तो केवल आम लोगों के लिए है।
मैकियावली लिखते हैं कि राजा को धर्म का राजनीतिक प्रयोग करना चाहिए। वह स्वयं धार्मिक नहीं होना चाहिए। परन्तु प्रजा के सामने उसे यह ढोंग रचना चाहिए कि वह धार्मिक एवं नैतिक व्यक्ति है। उसे एक बहुरूपिए की तरह होना कुछ और चाहिए और दिखाना कुछ और चाहिए।

इसका लाभ यह होगा कि लोग राजा को मानेंगे, उसका अनुशरण करेंगे एवं राजा के प्रति श्रद्धा भाव रखेंगे। अगर राजा यह दिखाए कि वह धार्मिक एवं नैतिक है तो आम जनता भी नैतिक मार्ग पर चलेगी एवं ऐसे में राज्य में अराजकता एवं अव्यवस्था कभी नहीं उत्पन्न होगा।

लोग शासक के भय से या शक्ति से ही शासित नहीं होते। शासक को चाहिए कि वह धर्म का एक हथियार के रूप में जनता पर प्रयोग करे।

• कार्ल मार्क्स (Karl Marx)
(1818 – 1883)

Introduction

परिचय :– कार्ल मार्क्स का जन्म 1818 ई० को जर्मनी के प्रशिया प्रांत में हुआ। इनका जन्म एक यहूदी परिवार में हुआ।

कार्ल मार्क्स को राजनीतिक चिन्तन के क्षेत्र में वैज्ञानिक समाजवाद का जनक माना जाता है। इनके विचारों ने स्पष्ट रूप से दुनिया के एक बहुत बड़े वर्ग पर प्रभाव डाला।

कार्ल मार्क्स की निम्नलिखित प्रसिद्ध रचनाएँ है :–

(i) The Poverty of Philosophy (1849)
(ii) The Economic and Philosophical Manuscripts (1844)
(iii) The Communist Manifesto (1848) (साम्यवादी घोषणा पत्र)
(iv) Capital (1867, 1885, 1894)
(v) The Civil War in France (1871)

(ऐतिहासिक भौतिकवाद)

इतिहास की आर्थिक व्याख्या (Economic Interpretation of History) :— इस सिद्धांत के द्वारा कार्ल मार्क्स यह समझाने का प्रयास करते हैं कि इतिहास का निर्धारण आर्थिक परिस्थितियों के अनुसार होता है। यह बताता है कि किस प्रकार उत्पादन का साधन विकसित होने के साथ-साथ या परिवर्तित होने से मानव इतिहास का एक युग दूसरे युग में बदलता है।

मार्क्स के पहले विद्वानों का मत था कि इतिहास का निर्माण बड़े-बड़े राजाओं, युद्धों तथा सेनापतियों द्वारा हुआ है। मार्क्स इन विद्वानों से सहमत नहीं थे। इनके अनुसार उत्पादन संबंधों के कुल योग से समाज की आर्थिक संरचना अस्तित्व में आती है और यही आगे चलकर समाज की राजनीतिक, सामाजिक स्वरूप को गढ़ने का कार्य करती है।

उत्पादन प्रणाली में जैसे-जैसे बदलाव होता है वैसे-वैसे मनुष्यों के सामाजिक संबंध भी बदल जाते हैं।

इस तर्क के आधार पर कार्ल मार्क्स मानव इतिहास को पाँच युगों में बाँटते हैं

(i) आदिम साम्यवादी युग
(ii) दास युग
(iii) सामन्ती युग
(iv) पूँजिवादी युग
(v) साम्यवादी युग

उत्पादन के साधन को दो वर्ग में बांटा गया है—
(i) बुर्जुवा वर्ग (Bourgeoisie class) → जिसके पास उत्पादन का साधन है
(ii) सर्वहारा वर्ग (Proletarial Class) → उत्पादन का साधन नहीं है।

1. आदिम साम्यवादी युग :- कार्ल मार्क्स के अनुसार यह युग इतिहास की प्रारंभिक अवस्था है। जहाँ मानव सामूहिक रूप से निवास करता है और वो और शिकार करके अपना पेट भरता है।

इस दौर में लोगों के बीच समानता का भाव था। समाज में न तो कोई शोषक था और न ही कोई शोषित था।

2. दास युग :- जैसे-जैसे सभ्यता का विकास हुआ, उत्पादन का साधन भी विकसित हुआ। इस युग में व्यक्तिक संपत्ति की की शुरुआत हुई। कुछ लोग जबरदस्ती लोगों को दास बनाकर शारिरिक श्रम के कार्य उनसे लेने लगे। इस प्रकार समय दो वर्गों में पहली बार विभाजित हो चुका था। और ये दो वर्ग थे - मालिक एवं दास। इस युग में दासों को जानवरों की तरह खरीदा एवं बेचा जाता था।

3. सामन्ती युग :- इस युग में समाज दो धरों में बँट गया। एक तरफ थे सामन्त तो दूसरी तरफ थे किसान। यहाँ पर उत्पादन का साधन भूमि हुआ करता था। इस दौर में शोषक वर्ग सामंत थे, और शोषित वर्ग किसान थे। क्योंकि सामन्त अपनी भूमि पर उन किसानों से खेती करवाते थे और उन्हें गुलामी की अवस्था में कैद करके रखता था।

4. पूँजिवादी युग :- इस दौर में मशीनों ने बड़ी भूमिका अदा की और इनकी शुरुआत औद्योगिक क्रांति से हमें देखने को मिलती

है। यहाँ उत्पादन का साधन मशीनें, उद्योग एवं कारखाने थे।

समाज में दो वर्ग विभक्त हुए या बँटे। एक जिसके पास मशीन एवं कारखाने थे (पूँजिपति वर्ग) (पूँजीपति वर्ग), दूसरा जो अपना श्रम बेचता था (मजदूर) इस युग में अमीर और अमीर हो रहे थे, वहीं गरीब और गरीब हो रहे थे। शोषण का मुख्य कारण था अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत और इसी वजह से खाई बढ़ती जा रही थी। (Theory of Surplus Value)

5. **साम्यवादी युग :—** कार्ल मार्क्स के अनुसार पूँजिवादी युग में शोषण अपने चरम पर होगा (वे अपनी रचना (The Communist Manifesto) साम्यवादी घोषणा पत्र में लिखते हैं कि इस शोषण के विरुद्ध क्रांति होगी। और उसके पश्चात् उत्पादन का साधन पर मजदूरों का स्वामित्व होगा। मजदूर इसे पूँजिपतियों से छीन लेंगे। और इस अवस्था को कार्ल मार्क्स सर्वहारा वर्ग का अधिनायकवाद कहते हैं (Dictatorship of the Proletariat)।

मार्क्स के अनुसार अंतिम अवस्था साम्यवाद की होगी। जो कि सर्वहारा वर्ग स्थापित करेगा। इस अवस्था में एक ऐसा समाज स्थापित होगा जिसमें उत्पादन का साधन किसी वर्ग के पास नहीं होगा। यह अवस्था वर्ग-विहीन एवं राज्य विहीन होगी और साथ ही हर व्यक्ति को उसकी योग्य योग्यता के अनुसार उसे कार्य मिलेगा और जरूरत के अनुसार वेतन प्राप्त होगा।

- Karl Marx के अनुसार 'राज्य' शोषण का यंत्र है।
- आर्थिक शक्ति, राजनीतिक स्तोत है। जिसके पास आर्थिक शक्ति होगी उसी के पास राजनीतिक शक्तियाँ होगी।

Page No:
Date: / /

उत्पादकीय संबंध एवं समाज का स्वरूप

(i) आदिम साम्यवादी युग → राज्य / वर्ग विहीन
(शिकार पर आधारित)

(ii) दास युग → मालिक - दास → पशु धन

(iii) सामंती युग → सामंत - कृषक → जमीन / भूमि

(iv) पूँजीवादी युग → पूँजीपति - मजदूर → उद्योग, मशीन
(क्रांति होगी) (लघु / बड़े)

(v) साम्यवादी युग → वर्ग - विहीन

आलोचना :- (i) कार्ल मार्क्स आर्थिक तत्व को जरूरत से ज्यादा महत्व दिया है। लोगों के जीवन को और भी कई सारे तत्वों से प्रभावित होना पड़ता है।

(ii) आर्थिक आधार पर सभी ऐतिहासिक घटना की व्याख्या संभव नही है

(iii) इतिहास की अवैज्ञानिक व्याख्या।

(iv) राजनीतिक सत्ता का एक मात्र आधार आर्थिक सत्ता नही।

(v) इतिहास की धारा का साम्यवादी युग में आकर आकर रुक जाना।

महत्व :- इस सिद्धांत के द्वारा मार्क्स ने आर्थिक तत्वों की महत्ता पर प्रकाश डाला है। इतिहास गवाह रहा है कि जिस वर्ग के पास उत्पादन का साधन रहा उसने राज्य एवं समाज को नियंत्रण नियंत्रित किया।

मार्क्स ने सामाजिक परिवर्तन

को वैज्ञानिक आधार पर समझने एवं समझाने हेतु इस सिद्धांत को प्रतिपादित किया।

मार्क्स के अनुसार राज्य का सिद्धांत :— प्राचीन यूनान के विचारक जैसे प्लेटो एवं अरस्तु राज्य को एक आवश्यक एवं नैतिक संस्था मानते थे। उसी तरह हीगल (Hegel) राज्य को धरती पर ईश्वर का अवतार बताते हैं।

लेकिन कार्ल मार्क्स का विचार भिन्न था। वह इसे एक अनावश्यक बुराई मानते थे। वह उसे वर्ग संघर्ष के द्वारा निर्मित एक पक्षपात-पूर्ण संस्था कहते हैं।

मानव इतिहास जब अपने प्रारंभिक अवस्था में था यानि आदिम साम्यवादी युग तब न तो कोई वर्ग संघर्ष था और इसलिए राज्य भी लुप्त था। इस अवस्था में लोगों के ऊपर शासन समाज का था।

मार्क्स के अनुसार जब सभ्यता का विकास हुआ तब दास युग आया। इसमें समाज का वर्गों में बँटवारा हो गया। एक वर्ग था मालिक का जो संख्या में कम थे, तो दूसरा वर्ग था दासों का जो बहुत संख्यक थे। वर्ग संघर्ष की उत्पत्ति हो चुकी थी। अल्पसंख्यक मालिकों ने जो आर्थिक शक्ति से परिपूर्ण थे, राज्य का गठन किया। क्योंकि वो डरते थे कि कहीं बहुसंख्यक दास विद्रोह न कर दे या उनसे उनकी निजी संपत्ति न छीन ले। राज्य कुछ नहीं है बल्कि इन मालिकों का हित देखने वाला एवं दासों को कानून, न्यायालय, सेना एवं पुलिस के भय से दबाए रखने वाला एक शोषणकारी संस्था था। इसकी उत्पत्ति वर्ग संघर्ष से हुई है।

मार्क्स मानते थे कि जिस वर्ग के पास आर्थिक शक्ति होगी, उसी के पास राजनीतिक शक्ति भी होगी। और यही वर्ग राज्य का संचालन होगा। युग चाहे कोई भी हो राज्य सदैव ही उन अल्पसंख्यकों अल्पसंख्यकों की सोचता है जो उत्पादन के साधन पर स्वामित्व बनाए हुए हैं। उदाहरण के लिए सामंती सामंती युग में राज्य पर नियंत्रण सामंतों का था। इसी प्रकार पूँजिवादी अवस्था में राज्य का नियंत्रण संख्या में कम लेकिन आर्थिक शक्ति से मजबूत पूँजीपतियों का था।

मार्क्स लिखते हैं कि जब साम्यवादी युग आएगा तब राज्य का अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा। कारण है कि इस युग में न तो कोई वर्ग होंगे और न ही कोई संघर्ष। एक सूखे पत्ते की तरह राज्य भी स्वतः बिखर जाएगा। और समाज शोषण से मुक्त एवं समतामूलक हो जाएगा।

युग	राज्य / राज्य विहीन	नियंत्रक
(i) आदिम साम्यवादी युग	राज्य विहीन	समाज
(ii) दास युग	राज्य	मालिक
(iii) सामंती युग	राज्य	सामंत
(iv) पूँजिवादी युग	राज्य	पूँजिपति
(v) साम्यवादी युग	राज्य विहीन	समाज

मार्क्स के द्वारा राज्य के ऊपर टिप्पणी :—

(i) आधुनिक राज्य की कार्यपालिका सभी पूँजिवादियों के सामान्य मामलों के प्रबंध के लिए एक समिति मात्र है।

(ii) राज्य एक वर्ग के द्वारा दूसरे वर्ग के दमन के लिए एक यंत्र है।

Thesis — Anti thesis
Synthesis

Page No:
Date: / /

राज्य का लोप होने के बाद समाज का स्वरूप :-

(i) उत्पादन के साधनों पर पूरे समाज का अधिकार होगा।
(ii) लोग अपनी योग्यता के अनुसार काम करेंगे तथा अपनी आवश्यकता के अनुसार प्राप्त करेंगे।
(iii) जो काम करने योग्य नहीं होंगे उनके लिए सामाजिक बीमा एवं सहायता का प्रबंध होगा।
(iv) शोषण का अंत होगा, गरीबी नहीं होगी।

Date 9/08/23

राज्य सिद्धांत की आलोचना :-

(i) राज्य एक आवश्यक संस्था था। इसका उद्देश्य व्यवस्था बनाए रखना एवं जन-कल्याण है। मार्क्स के अनुसार राज्य एक अनावश्यक बुराई है लेकिन फिर भी राज्य का विकल्प आज के आधुनिक युग में ढूंढ पाना संभव नहीं हुआ।

(ii) कार्ल मार्क्स का विचार था कि राज्य नामक संस्था साम्यवादी युग में विलुप्त हो जाएगा, यह सूखे फूल की तरह डाल से गिर जाएगा लेकिन इतिहास गवाह है कि राज्य न तो साम्यवादी रूस और न ही साम्यवादी चिन्ह में लुप्त हुआ।
सोवियत संघ रूस में 1917 की रूसी क्रांति बोलसेविक (बोलशेविक क्रांति) के बाद भी राज्य का अस्तित्व बना हुआ है और विचित्र बात तो यह है कि गोर्बाचेव के शासन में समाजवादी नीतियों को छोड़कर के वहाँ के राज्य ने पूँजिवादी नीतियों को अपना लिया और अंततः 1991 में सोवियत संघ का विखंडन हो गया।

अलगाव का सिद्धांत (Alienation)
अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत (Surplus) } कार्ल मार्क्स के द्वारा दिया गया है।

Page No: ......
Date: ../../....

क्रांति का सिद्धांत :- कार्ल मार्क्स द्वंद्वात्मक भौतिकवाद सिद्धांत के

प्रतिपादक है। इस आधार पर वे कहते हैं कि कुछ भी स्थाई नहीं है हर युग में व्याप्त अंतरविरोध नए युग हेतु मार्ग को प्रशस्त करता है।

उनके अनुसार पूँजिवादी युग में मजदूरों का शोषण अपने चरम सीमा पर होगा। इसका कारण है अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत जिसके वजह से अमीर और अमीर होंगे एवं गरीब और गरीब होगा। दूसरी बड़ी वजह है - अलगाव का सिद्धांत। यह एक प्रक्रिया है जो किसी मजदूर को उसके उत्पाद से, उत्पादन प्रक्रिया से, स्वयं से एवं समाज से अलग कर देता है।

मार्क्स के अनुसार शोषण तो हर युग में था, लेकिन पूँजिवादी युग में यह और अधिक विकराल रूप ले लेता है। वे अपनी प्रसिद्ध रचना 'The Communist Manifesto' में आवाहन करते है "विश्व के मजदूरों तुम एक हो जाओ। तुम्हारे पास खोने को कुछ नहीं है सिवाय पैरों की बेड़िया।" मजदूर जब एक होकर पुरानी व्यवस्था के विरुद्ध आवाज बुलंद करेंगे तो एक नए युग का जन्म हो होगा।

मार्क्स मानते है कि जब एक हिंसक क्रांति होगी तभी पूँजिवाद को उखाड़ फेंका जा सकता है। वे मानते है कि हिंसा के बिना पूँजिपतियों को हराना असंभव है।

हिंसक क्रांति के पश्चात मजदूर उत्पादन का साधन पर अपना स्वामित्व कर लेंगे और राज्य पर अपना कब्जा। इसी अंतरिम अवस्था को मार्क्स सर्वहारा वर्ग का अधिनायकवाद नाम देते हैं।

धीरे-धीरे जैसे जैसे पूँजीवाद का अंश समाज से पूरी तरह मिट जाएगा तब एक वर्ग विहीन और राज्य विहीन समता मूलक ~~स्थाई~~ समाज स्थापित होगी। (साम्यवादी युग) इस ~~अवस्था~~ अवस्था में न ही कोई शोषक होगा और न ही कोई शोषित। यहाँ पर उत्पादन के साधनों का समाजीकरण हो जाएगा।

हालांकि मार्क्स बाद के वर्षों में यह मानने लगते है कि सामाजिक क्रांति अहिंसक माध्यमों से ही संभव होगा। वे ऐसा विकसित राष्ट्र जैसे अमेरिका फ्रांस आदि के संदर्भ में उचित मानते है। जहाँ सामाजिक परिवर्तन शांतिपूर्ण ~~लोकतांत्रि~~ लोकतांत्रिक (उदारवादी) तरीके से जनता ला सकती है। विश्व के कई देश है जहाँ ~~कई~~ भारत भी शामिल हो सकता है। जहाँ की सरकारों ने सामाजिक परिवर्तन हेतु साकारात्मक कदम उठाए। जैसे गरीबी उन्मुलन कार्यक्रम, जमीनदारी का उन्मूलन, भूमि का गरीबों मे / भूमिहीनों में ~~पुर्नवितरण~~ पुनर्वितरण आदि।

Date 05/08/23

Thomas Hobes (थॉमस हॉब्स)

परिचय :-
थॉमस हॉब्स का जन्म इंग्लैंड के मैल्मेस्बरी शहर (Malmesbury) के ~~वेस्टपोर्ट~~ वेस्टपोर्ट (Westport) नामक स्थान में हुआ। जन्म का वर्ष था 1588 ई०। ~~हॉब्स को आधुनिक राजनीतिक विज्ञान का जनक माना जाता~~ है। उनके दर्शन में व्यक्तिवाद एवं अधिनायकवाद दोनों का झलक दिखाई पड़ता है। उन्हे पूँजीवादी विचार धारा का समर्थक माना गया है। वे खुला/मुक्त बाजार एवं प्रतिस्पर्धा के समर्थक माने जाते हैं। उनकी निम्नलिखित प्रसिद्ध रचनाएँ हैं :- (i) Leviathan (ii) The Elements of Law (iii) De Corpore (iv) De Cive (v) De Homine

हॉब्स के अनुसार मानव स्वभाव :- हॉब्स मानते है कि लोग स्वभाव से बुरे एवं स्वार्थी है। हर व्यक्ति चाहता है अपना भलाई और इसके लिए वह किसी भी हद तक जा सकता है। लोग अतार्किक है।

हॉब्स का प्राकृतिक अवस्था :- प्राकृतिक (State of Nature) अवस्था वह है जब राज्य का निर्माण नही हुआ था। इस अवस्था में जंगल का कानून था। यह स्थिति अराजकता एवं अव्यवस्था ~~एवं अ~~ की थी। लोगों के व्यवहार को नियंत्रित करने के लिए कोई निष्पक्ष संस्था नही था। वहाँ तो बस एक ही नियम था और वह है, जिसकी लाठी उसकी भैंस (Might is right) इसका तात्पर्य है कि इस अवस्था में उसी का बोलबाला होगा जो समाज में ताकतवर होंगे। तथा जो कमजोर

(मेरी माँ ने जुड़वा बच्चों को जन्म दिया एक मैं और दूसरा भय। – (Thomas Hobes)

Page No: ______
Date: __/__/__

होंगे उन्हें प्रताड़ना दी जाएगी।

लोगों के पास केवल एक ही प्राकृतिक अधिकार (Natural right) होगा। और वह होगा आत्मसंरक्षण का। इसी अधिकार ने अराजकता एवं अव्यवस्था को जन्म दिया था। हॉब्स कहते हैं कि प्राकृतिक अवस्था से बाहर निकलने के लिए लोगों ने परस्पर समझौता किया एवं राज्य का निर्माण किया।

सामाजिक समझौता (Social Contract) :-

लोगों ने प्राकृतिक अवस्था की बुराईयों से तंग आकर राज्य बनाने का सोचा। इसके लिए लोगों ने प्राकृतिक कानून का सहारा लिया।

Date 07/08/23

हॉब्स के अनुसार 19 प्राकृतिक कानून हैं, उनमें से तीन कानून मुख्य हैं।

(i) व्यक्ति शांति चाहता है।
(ii) हर व्यक्ति को अपने अधिकार त्यागने होंगे।
(iii) सभी को समझौते का सम्मान करना होगा।

इन प्राकृतिक कानूनों के आधार पर हॉब्स ने कहा कि सभी व्यक्ति आपस में इकठ्ठा होकर समझौता करेंगे एवं अपने अधिकार त्याग देंगे। इस समझौते के माध्यम से एक राज्य की उत्पत्ति होगी जिसके पास असीमित शक्तियाँ होंगी। शासक को चुनौती नहीं दी जा सकती क्योंकि वह राज्य में सम्प्रभु शक्ति का स्रोत है। हर कानून उसके नीचे है।

हॉब्स ने अपने समय में इंग्लैंड में गृह युद्ध देखा था। यह गृह युद्ध लड़ा जा रहा था लोकतंत्र के समर्थक एवं राजतंत्र के

समर्थकों के बीच। चूंकि हॉब्स का परिवार राजघरानों के निकट था तो उनके विचारों में हम निरंकुश राजतंत्र की झलक देखने को पाते हैं।

हॉब्स मानते थे कि शासक सत्ता जितने कम लोगों के हाथ में होगा वह उतना ही बेहतर शासन कर पाएगा। चूंकि मानव स्वभाव से कपटी, स्वार्थी एवं बुरे हैं तो ऐसे में जरूरी है कि उनपर शासन एक निरंकुश राजा का होगा। लोग उसे किसी भी परिस्थिति में सत्ता से नहीं हटा सकते सिवाए जब बात उनके जीवन की रक्षा की हो।

हॉब्स मानते हैं कि लोगों के बीच जो समझौता होगा वह खत्म नहीं किया जा सकता, क्योंकि ऐसा करने से वे फिर प्राकृतिक अवस्था में चले जाएंगे।

Date 8/08/23

जॉन लॉक का राजनीतिक विचार :-
(Political Thoughts of John Lock)

जॉन लॉक का जन्म 1632 ई० को इंग्लैंड में हुआ। उन्हें उदारवाद का जनक माना जाता है। ✓ लॉक राज्य की उत्पत्ति के सामाजिक समझौता सिद्धांत का समर्थन करते हैं। लॉक के जीवन एवं विचार पर 1688 में घटित गौरवपूर्ण क्रांति (Glarious Revolution) (इंग्लैंड) ने अपना छाप छोड़ा। इस क्रांति के माध्यम से इंग्लैंड

में राजतंत्र से संवैधानिक राजतंत्र में परिवर्तन हुआ।
लॉक ने निम्नलिखित किताबों की रचना की -
(i) Two Treatises of Government
(ii) Essay Concerning Human Understanding
(iii) Some Thoughts Concerning Education

मानव स्वभाव (Human Nature) :-
लॉक के अनुसार मानव स्वभाव से परोपकारी एवं अच्छा होता है। उसके अंदर प्रेम, सहयोग एवं आपसी भाईचारा की भावना व्याप्त है।

प्राकृतिक अवस्था (State of Nature) :- लॉक के अनुसार मानव का निर्माण नहीं हुआ था, तब लोगों के बीच परस्पर सहयोग की भावना थी। चारो तरफ प्रेम एवं भाईचारे की भावना से रह रहे थे।

लोगों के पास तीन प्राकृतिक अधिकार थे।
(i) जीवन का अधिकार (Right to Life)
(ii) सम्पत्ति का अधिकार (Right to property)
(iii) स्वतंत्रता का अधिकार (Right to liberty)

प्राकृतिक अवस्था में लोग इस कानून का पालन करते थे - "दूसरों के साथ तुम वैसा व्यवहार करो जैसा व्यवहार तुम उनसे अपेक्षा करते हो।"

यद्यपि प्राकृतिक अवस्था में सबकुछ अच्छा था इसमें कुछ कमियां भी थी।

(i) इस अवस्था में कानून का अभाव था जिससे कि यह तय किया जा सके कि क्या सही और क्या गलत है।

(ii) इस दौरान एक निष्पक्ष संस्था का भी अभाव है जो लोगों के बीच उभरे मतभेद को दूर कर सके एवं न्याय दे।
इन्हीं कमियों को दूर करने के लिए लोगों ने परस्पर सहयोग के माध्यम से राज्य का निर्माण किया।

सामाजिक समझौता (Social Contract) :-
यह समझौता दो चरणों में होता है-

(i) नागरिकों के बीच :- इस समझौते के द्वारा लोगों ने अपने अधिकार त्याग दिए और समाज को दे दिया।

(ii) नागरिकों एवं शासक के बीच :- इस समझौते के द्वारा लोगों ने अपने सामुहिक अधिकार शासक को सौंपा।

इस समझौते के माध्यम से लोगों ने राज्य का निर्माण किया लेकिन शासक के ऊपर कुछ अंकुश भी लगाए। कहने का अर्थ है कि लॉक ने एक सीमित संवैधानिक शासन की कल्पना की। शासक का कर्तव्य होगा कि वह लोगों के जीवन, स्वतंत्रता एवं संपत्ति की रक्षा करे। वह किसी भी परिस्थिति में जनता से इन्हें छीन नहीं सकता।

इस समझौते के द्वारा शासक को जनता के प्रति उत्तरदायी बनाया गया है। तात्पर्य है कि यदि शासक अपने कर्तव्यों का पालन न करे तो जनता विद्रोह कर सकती है एवं दूसरे व्यक्ति को शासक व शासन सौंप सकती है।

Date 17/08/23

जीन जेक्स रूसो

लॉक के अनुसार - अच्छा ... हॉब्स - बुरे ... रूसो - अच्छे ...

Page No: ____ Date: ____

* 'प्रकृति की ओर लौट चलो।' - रूसो!

परिचय :- जीन जेक्स रूसो का जन्म 1712 ई० को जिनेवा शहर मे हुआ। इनका बचपन बहुत कठिनाईयो से भरा था। इन्होंने अपने जीवन मे बहुत उथल-पुथल देखा। इन्होंने औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं की।

फ्रांसीसी क्रांति इनके विचारों से प्रभावित थी।

इन्हें हम सामाजिक समझौता सिद्धांत से जोड़कर देखते है क्योंकि ये राज्य के उत्पत्ति की संदर्भ मे अपनी रचना 'The Social Contract' में सामाजिक समझौता सिद्धांत का प्रतिपादन करते है। रूसो की प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित है :-

(i) The Social Contract
(ii) Discourses on the Origin of Inequality Among men.
(iii) Discourses on Science and Arts.
(iv) Emile

मानव स्वभाव :-

रूसो मानव स्वभाव के संदर्भ में हॉब्स एवं लॉक दोनों के विचारो से मिलते-जुलते है। उनके अनुसार मानव स्वभाव से अच्छा भी है तो बुरा भी है। रूसो प्राकृतिक अवस्था का वर्णन करते हुए कहते है कि जब राज्य का निर्माण नहीं हुआ था तो मनुष्य अपनी प्रारंभिक अवस्था में स्वभाव से नेक, दयालु और अच्छा था। इस दौरान लोगों के बीच प्रेम एवं सद्भाव था।

रूसो कहते है कि मनुष्य एक आदर्श बर्बर / सभ्य पशु (NOBLE SAVAGE) के

समान था। लेकिन यह अवस्था बहुत लंबे समय तक टिकी हुई नहीं रही। रूसो के अनुसार दो कारणों से लोगों के बीच लड़ाई-झगड़े शुरू हुए।

(i) जनसंख्या की वृद्धि एवं सभ्यता का विकास
(ii) लोगों में तर्क एवं बुद्धि का विकास

रूसो का मानना था कि लोग बुरे नहीं हैं वरन् बल्कि परिस्थितियाँ उन्हें बुरा बनाती हैं। तो इन्हीं दो कारणों से प्राकृतिक अवस्था में अब लोगों का जीवन सुखमय नहीं रहा। लोग संपत्ति के लिए लड़ने झगड़ने लगे। समाज में इसी संपत्ति ने खाई का निर्माण किया। निजी संपत्ति के कारण ही समाज दो वर्गों में बँटा। एक अमीरों का वर्ग तो दूसरा गरीबों का वर्ग।

सामाजिक समझौता :-

प्राकृतिक अवस्था की बुराईयों से तंग आकर लोगों ने परस्पर समझौते के माध्यम से लोगों ने राज्य के निर्माण का विचार किया। इनके समझौता में लोगों ने अपने अधिकार शासक को नहीं सौंपा बल्कि समस्त समाज को सौंपा और इस तरह से अपने अधिकार गवाने के बाद भी लोगों ने अपने अधिकार नहीं खोएं। लोगों ने अपने अधिकार इस नाते पुनः प्राप्त कर लिया कि लोग समाज का एक हिस्सा हैं।

रूसो ने दो तरह की इच्छाओं की बात की है।

(i) सर्वार्थ इच्छा
(ii) आदर्श इच्छा :- (समाज की हित की इच्छा, आदर्श इच्छा को जोड़कर सामान्य इच्छा बनता है।)

~~यथार्थ यथार्थ~~

यथार्थ इच्छा :- ~~यथा~~। यथार्थ इच्छा व्यक्तिगत हित को सर्वोपरी मानता है। यह स्वार्थ पूर्ण इच्छा है तो दूसरी ओर आदर्श इच्छा सार्वजनिक हित को सर्वोपरी मानता है। यह स्वार्थरहित इच्छा है।

रूसो के अनुसार जब हम लोगों के आदर्श इच्छा को ~~जोड़क~~ जोड़ देंगे तो सामान्य इच्छा प्रकट होगा। सामान्य इच्छा कुछ और नहीं बल्कि पूरे समाज की भलाई का इच्छा है और इसी से समाज चलेगा। हर व्यक्ति को सामान्य इच्छा का पालन करना होगा। और यदि वे नहीं करते है तो उन्हें सामान्य इच्छा मानने के लिए मजबूर भी किया जा सकता है।

एक तरह से रूसो लोकतंत्र की स्थापना करने का विचार देते है जहाँ शासन सत्ता किसी व्यक्ति ~~या व~~ या वर्ग के हाथों में नहीं बल्कि पूरे समाज के हाथों में होती है और शासन का संचालन सामान्य इच्छा द्वारा किया जाता है।

रूसो के अनुसार लोगों ने प्राकृतिक अवस्था से निकलकर नागरिक समाज का गठन किया और इस तरह उनकी प्राकृतिक स्वतंत्रता, नागरिक स्वतंत्रता में बदल जाती है।

लोगों —(समझौता)→ समाज को अपने अधिकार दिए → सामान्य इच्छा

↓

आदर्श इच्छा

Date 23/08/23

(सामाजिक समझौता = सामाजिक अनुबंध)

Page No: ___
Date: ___

जीन जेक्स रूसो

जीन जेक्स रूसो का सिद्धांत सामान्य इच्छा (General Will)

→ जीन जेक्स रूसो एक सामाजिक समझौता सिद्धांतकार है। उनके अनुसार राज्य की उत्पत्ति प्राकृतिक अवस्था में से हुई है। समझौते के पश्चात संप्रभु शक्ति का वास सभ्य समाज में होता है और समाज को चालित करने वाला तत्व ही सामान्य इच्छा कहलाता है।

जीन जेक्स रूसो का जन्म 1712 ई० को जिनेवा में होता है। उनकी प्रसिद्ध रचना 'The Social Contract' में वे राज्य की उत्पत्ति के संबंध में अपने विचार लिखते हैं और इसी में वे सामान्य इच्छा के सिद्धांत को भी प्रतिपादित करते हैं। रूसो की अन्य प्रमुख रचनाएँ हैं-

(i) Emile
(ii) Discourses on Science and Arts
(iii) Discourses on the ~~Inequality Among~~ Origin of Inequality Among Men.

रूसो के अनुसार प्राकृतिक अवस्था में चारों तरफ सुख, शांति एवं भाईचारा था। लोग अबोध बालक की तरह थे। उनमें छल-कपट नहीं था। रूसो लिखते हैं कि इस दौरान लोग सभ्य पशु थे (NOBLE SAVAGE)।

आगे चलकर जैसे-जैसे लोग बुद्धिमान होते गए एवं जनसंख्या बढ़ती गई तो लोग सीमित संसाधनों के लिए आपस में लड़ने भिड़ने लगे। अब सुख-शांति का नाश हो चुका था एवं समाज में असमानता एवं अराजकता व्याप्त हो चुकी थी।

इसी अराजकता को समाप्त करने के लिए लोगों

Page No: ....
Date: .../.../....

ने समझौता किया और अपनी शक्तियाँ एवं अधिकार त्याग कर उसे समाज को दे दिया।

रूसो लिखते है कि लोगों के अंदर दो तरह की इच्छा या भावना होती है -

(i) यथार्थ इच्छा (Actual Will) - स्वार्थपूर्ण

(ii) आदर्श इच्छा (Real Will) - नि:स्वार्थ

जब हरेक व्यक्ति की आदर्श इच्छा को जोड़ दिया जाएगा तब सामान्य इच्छा का जन्म होगा। इसका तात्पर्य है अब समाज को चलाने के लिए जन-कल्याण एवं जनहित की भावना सर्वोपरी होगी और हरेक व्यक्ति को ये मानना पड़ेगा।

प्राकृतिक अवस्था ⟶ सभ्यता + बुद्धि का विकास ⟶ अराजकता ⟶ समझौता ⟶ सभ्य समाज ⟶ सामान्य इच्छा

Date 22/08/23

Jeremy Bentham (जेरेमी बेंथम)

Page No: ______
Date: ______

जेरेमी बेंथम का जन्म सन् 1748 ई. में इंग्लैंड में एक संपन्न वकील परिवार में हुआ। इनके पिता एवं दादा भी वकील थे। बेंथम 15 वर्ष की आयु में ~~ऑक्सफ~~ ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से ~~स्नात~~ स्नातक की उपाधि ~~प्राक~~ प्राप्त की। आगे चलकर वे वकालत की पढ़ाई इंग्लैंड के लिंकन्स इन (Lincoln's Inn) से करते है।

बेंथम को हम आज उनके उपयोगितावाद (Utilitarianism) के सिद्धांत के लिए जानते है यद्यपि बेंथम ने वकालत की पढ़ाई की थी परन्तु वे वकील नही बने और उन्होंने अपने-आप को एक दार्शनिक, विचारक, के रूप में स्थापित किया। उन्होंने इंग्लैंड में सुधार के लिए बिगुल फूका। उपयोगितावाद के सिद्धांत के अलावा उन्हें हम उनके वैधानिक सुधारों, जेल सुधार, राजनीतिक सुधार एवं प्राकृतिक न्याय और अधिकारों संबंधी विचारों ~~से~~ ~~आप~~ के लिए जानते है।

बेंथम प्रगतिशील विचारों के थे उन्होंने इंग्लैंड में सुधार लाने के लिए कार्य किया। वे सार्वभौमिक वयस्क-मताधिकार चाहते थे इंग्लैंड में, साथ ही प्रतिवर्ष चुनाव ~~एवं~~ एवं गुप्त मतदान। उन्होंने इंग्लैंड के जेलों में बंद कैदियों के लिए भी आवाज उठाया और जेल सुधार करने का विचार रखा। वे प्राकृतिक न्याय एवं प्राकृतिक अधिकारों के सिद्धांत को सिरे से खारीज करते हैं।

उनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित है।

(i) Fragments on Government.
(ii) An Introduction to the Principles of Morals and Legislation.

उपयोगितावाद
→ कानून ऐसा होना चाहिए कि अधिकतम लोगों को अधिकतम लाभ मिल सके।

Date 29/08/23 Jeremy Benthum

Page No: Date:

उपयोगितावाद का सिद्धांत :-

बेंथम उपयोगितावाद सिद्धांत के ~~समर्थक है~~ प्रेरमी प्रवर्तक है। उन्होंने सर्वप्रथम एक व्यापक स्तर पर इस सिद्धांत का प्रयोग राजनीति के क्षेत्र में किया था। हालांकि उपयोगितावाद डेविड ह्यूम की (David Hume) देन है।

उपयोगितावाद (Utilitarianism) का सिद्धांत सुखवाद पर आधारित है। इसके अनुसार राज्य को ऐसे कानून बनाने चाहिए जिससे कि लोगों के सुख में वृद्धि हो एवं साथ ही ~~उसके~~ उनके दुःखों में कमी हो। लोगों के लिए वही कानून उपयोगी है जो सुख में बढ़ोतरी करे और दुःख में कमी। बें

बेंथम नैतिकता के सिद्धांतों को नहीं मानते उनके अनुसार मानव जीवन इन्हीं दो तत्वों से प्रभावित होता है। एक सुख और दूसरा दुःख। बेंथम के अनुसार किसी भी कार्य का उद्देश्य से ज्यादा महत्वपूर्ण उसका परिणाम है। इसका तात्पर्य है कि बेंथम नैतिकता से ज्यादा महत्वपूर्ण किसी भी कार्य के परिणाम को मानते है। अर्थात् वह कार्य कितना उपयोगी सिद्ध हुआ लोगों के लिए। बेंथम सुख की मात्रा पर जोर देते हैं। उनके अनुसार सुख कम या ज्यादा होता है; अच्छा या बुरा नहीं। वे सुख को मापने के लिए सुखमापन पद्धति (Felicific Calculus) का विकास करते है। उनके अनुसार सुख और दुःख को मापा जा सकता है यदि किसी कार्य में सुख की मात्रा ज्यादा है तो उसे पूरा करना चाहिए और यदि दुःख की मात्रा ज्यादा है तो उसे वहीं

छोड़ देना चाहिए।
बेंथम अपनी प्रसिद्ध रचनाओं में इस सिद्धांत का प्रतिपादन करते हैं उनकी दो प्रमुख पुस्तके निम्नलिखित है :-
(i) Fragments on Government
(ii) Introduction to the Principles of Morals and Legislation.

बेंथम सामाजिक क्षेत्र में भी उपयोगितावाद सिद्धांत का समर्थन करते हैं। उनके अनुसार सामाजिक क्षेत्र में राज्य को कानून इस प्रकार बनाने चाहिए जिससे कि अधिकतम लोगों को अधिकतम सुख प्राप्त हो।

बेंथम - " प्रकृति ने मानव जाति के सुख-दुःख नामक दो महत्वपूर्ण स्वामियों के शासन में रखा है। हमें क्या करना चाहिए और हम क्या करेंगे इसका निर्णय उन्हीं पर निर्भर करता है।"

सुख दुःख का वर्गीकरण :-
बेंथम सुख और दुख के स्वरूप को समझाने के लिए उन्हें अलग-अलग प्रकारों में बाँट देता है। वह सुख के 14 प्रकार बताता है वही दुःख के 12 प्रकार बताता है।

सुख-दुःख के स्त्रोत (Source of Plasure and pain) :- बेंथम सुख-दुःख प्राप्ति के 4 प्रमुख स्त्रोत बताते है।

(i) भौतिक (Materialistic)
(ii) नैतिक (Moral)
(iii) राजनीतिक (Political)
(iv) धार्मिक (Religion)

प्रकृति से प्राप्त होने वाला सुख और दुःख भौतिक सुख कहलाता है। जब कोई सुख-या दुःख नैतिक रूप से अच्छा या बुरा कार्य करने में होता है तो उसे नैतिक सुख या दुःख कहते हैं। जब राज्य का कोई कानून व्यक्ति को सुख या दुःख पहुँचाएँ तो वह राजनीतिक सुख-दुःख कहलाता है। धार्मिक मान्यता के अनुसार या विरुद्ध काम करने पर सुख-दुःख मिलता है तो उसे धार्मिक सुख-दुःख कहते हैं।

सुखवादी मापक यंत्र (Felicific Calculus)

बेंथम सुख-दुःख की मात्रा पर बल देते हैं। इसे मापने के लिए सुखवादी मापन यंत्र (Felicific Calculus) का उन्होंने अविस्कार किया। उन्होंने इसे मापने के लिए सात (7) कसौटियाँ निर्धारित की हैं।

(i) तिव्रता
(ii) स्थिरता
(iii) निश्चितता
(iv) निकटता
(v) जनन-शक्ति
(vi) विशुद्धता
(vii) विस्तार
• व्यापकता

बेंथम के अनुसार यदि किसी घटना से या कार्य

(i) भौतिक (Materialistic)
(ii) नैतिक (Moral)
(iii) राजनीतिक (Political)
(iv) धार्मिक (Religion)

प्रकृति से प्राप्त होने वाला सुख और दुःख भौतिक सुख कहलाता है। जब कोई सुख-या दुःख नैतिक रूप से अच्छा या बुरा कार्य करने में होता है तो उसे नैतिक सुख या दुःख कहते हैं। जब राज्य का कोई कानून व्यक्ति को सुख या दुःख पहुचाएँ तो वह राजनीतिक सुख-दुःख कहलाता है। धार्मिक मान्यता के अनुसार या विरुद्ध काम करने पर सुख-दुःख मिलता है तो उसे धार्मिक सुख-दुःख कहते है

सुखवादी मापक यंत्र (Felicific Calculus)

बेंथम सुख-दुःख की मात्रा पर बल देते हैं। इसे मापने के लिए सुखवादी मापन यंत्र (Felicific Calculus) का उन्होंने अविस्कार किया उन्होंने इसे मापने के लिए सात (7) कसौटियाँ निर्धारित की है।

(i) तिव्रता • व्यापकता
(ii) स्थिरता
(iii) निश्चितता
(iv) निकटता
(v) जनन-शक्ति
(vi) विशुद्धता
(vii) विस्तार

बेंथम के अनुसार यदि किसी घटना से या कार्य

से उत्पन्न होने वाले सुखों और दुःखों का मूल्यांकन करते हुए उन्हें दो तराजु में तौलें। यदि सुख वाला पलड़ा भारी है तो वह कार्य उपयोगी है, यदि दुःख वाला पलड़ा ज भारी है तो वह कार्य अनुपयोगी है।

बेंथम के उपयोगितावाद के विशेषताएँ :-

(i) बेंथम के अनुसार :- हर व्यक्ति सुख प्राप्त करना चाहता है। धन, अच्छा स्वास्थ्य एवं उच्च पद व्यक्ति के अंतिम उद्देश्य नहीं बल्कि सुख प्राप्ति के साधन मात्र है।

(ii) बेंथम के अनुसार सुख और दुःख को मापा जा सकता है और उसे मापने की पद्धति सुखवादी मापन पद्धति है।

(iii) प्रत्येक व्यक्ति अधिक से अधिक सुख तथा कम से कम दुःख चाहता है।

(iv) राज्य का उद्देश्य अधिकतम व्यक्तियों को अधिकतम सुख है लोग राज्य का पालन इसलिए करते हैं क्योंकि ऐसा करना उनके हित में होता है।

(v) कानून का मूल्यांकन अधिकतम लोगों का अधिकतम सुख के आधार पर होना चाहिए।

आलोचना :- उपयोगितावाद सिद्धांत को आलोचकों ने अस्पष्ट भ्रम पैदा

Page No: ....
Date: ..../..../....

करने वाला तथा अभौतिक बतलाया। आलोचकों ने बैंथम के सुखवादी मापन यंत्र को गलत तथा सुखवाद की मान्यता को ~~ना~~ नैतिकता की उपेक्षा करने वाला ~~बतलाता~~ बतलाया है। कुछ आलोचकों ने यह भी कह दिया है कि उपयोगितावाद सिद्धांत को बहुमत को अल्प मत पर अत्याचार करने की छूट मिल जाती है।

Date 11/09/23

जे० एस० मिल (J.S Mill)

जॉन स्टुवर्ट मिल (John Stuart Mill)

x x x

[J.S Mill बेंथम के शिष्य / चेला थे।]

जीवन परिचय :— जे० एस मिल का जन्म सन् 1806 ई० को इंग्लैंड में हुआ था। उनके पिता का नाम जेम्स मिल था। वे बेंथम के मित्र थे। ~~जे० एस०~~ J.S Mill ने बचपन में कोई औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं की बल्कि वे घर पर रहकर ही अपने पिता से पढ़ाई करते थे। बहुत ही कम आयु में उन्होंने कई सारे ग्रंथ पढ़ लिए थे। 17 वर्ष की आयु में मिल ईस्ट इंडिया कंपनि (East India Company) के अधिकारी नियुक्त होते हैं। 21 वर्ष की आयु में वे डिप्रेशन (Depression) के शिकार भी हो जाते हैं। आगे चलकर वे बेंथम के उपयोगितावाद में जरूरी बदलाव भी करते हैं।

मिल एक प्रसिद्ध इतिहासकार, दार्शनिक एवं राजनीतिज्ञ भी थे। वे संसद के सदस्य भी

बन चुके जाते हैं। उनका राजनीति विज्ञान में बहुत योगदान है। उन्होंने उपयोगितावाद में परिवर्तन किया, एवं कल्याणकारी सामाजिक नीतियों महिला मताधिकार का समर्थन किया एवं कल्याणकारी सामाजिक नीतियों का समर्थन भी किया।

मिल के द्वारा रचित पुस्तकें :—

(i) On Liberty
(ii) The Subjection of Women
(iii) Utilitarianism
(iv) Elements of Political Economy
(v) The Consideration on Representative Government
(vi) System of Logic

जे॰ एस॰ मिल का उपयोगितावाद :—

जे॰ एस॰ मिल अपनी प्रसिद्ध रचना Utilitarianism में उपयोगितावाद का संशोधित विचार रखते हैं। मिल के अनुसार कुछ सुख दूसरे सुखों से श्रेष्ठ होते हैं। मिल भौतिक सुखों के साथ-साथ नैतिक सुखों पर भी बल देते हैं। मिल ने बेंथम के उपयोगितावाद में निम्नलिखित संशोधन किए हैं।

(i) **सुखों में गुणात्मक अंतर :—** बेंथम सुखों में मात्रात्मक अंतर मानते थे किन्तु मिल ने सुखों में गुणात्मक अंतर भी माना। बेंथम के अनुसार सब सुख समान है। अतः खेलने में उतना ही आनंद आता है जितना काव्य पाठ में। मिल ने

इसका विरोध किया और लिखा कि जिस व्यक्ति ने उच्च ~~स्तर~~ स्तरीय सुख को ~~और~~ निम्न ~~स्तर~~ ~~स्तरीय~~ का ~~सुख से तुलना में अधिक चाहता है~~ स्तरीय और निम्न स्तरीय दोनों प्रकार के सुख का अनुभव किया है। वह उच्च-स्तरीय सुख को निम्न स्तरीय सुख के तुलना में अधिक चाहता है। मिल के अनुसार शारिरिक सुख से बेहतर बौद्धिक सुख है। क्योंकि इससे मानसिक शांति मिलती है।

मिल के अनुसार यदि विद्वान असंतुष्ट है तो वह संतुष्ट मुर्ख से कहीं अधिक अच्छा है। मिल के शब्दों में एक संतुष्ट सुअर होने की अपेक्षा एक ~~अंत~~ असंतुष्ट मनुष्य होना अधिक अच्छा है।

(ii) <u>सुखों को मापा नहीं जा सकता</u> :- मिल के अनुसार सुख को कभी मापा नहीं जा सकता। मिल बेंथम के Falicific Calculus की आलोचना करते हैं।

(iii) <u>उपयोगितावाद का आधार नैतिकता</u> :- मिल बेंथम के इस विचार से सहमत नहीं थे कि व्यक्ति के जीवन का लक्ष्य भौतिक आनंद के अलावा कुछ नहीं। बेंथम यह भी मानते थे कि यदि किसी कार्य से भौतिक सुख की प्राप्ति होती है तो वह उपयोगी है। उन्होने नैतिकता को कभी आधार नहीं बनाया। बेंथम ने राजनीति को नैतिकता से अलग किया; लेकिन मिल ने उपयोगितावाद का आधार नैतिकता को बनाया। इनके अनुसार एक व्यक्ति का गुण होना चाहिए दूसरों के सुख

में वृद्धि करना और उनके दुःख में कटौती करना।

(iv) व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक हित :- मिल कहते हैं कि उपयोगितावाद व्यक्ति का अधिकतम सुख न होकर अधिकतम सामूहिक सुख है। मिल का यह भी मत था कि प्रत्येक व्यक्ति को मानव जाति के बारे में सोचना चाहिए और अतः उसे सार्वजनिक सुख के प्रयास करना चाहिए। मिल ने व्यक्ति को श्रेष्ठ एवं नैतिक प्राणी बताकर उसे सार्वजनिक हित के लिए प्रयास करना चाहिए।

(v) मिल स्वतंत्रता को महत्व देते हैं :- बेंथम जहाँ स्वतंत्रता के तुलना में उपयोगिता को अधिक महत्व देते हैं तो वही मिल स्वतंत्रता को व्यक्ति के जीवन में सर्वाधिक महत्व देते हैं। मिल के अनुसार स्वतंत्रता के बिना व्यक्ति का सर्वांगिण विकास संभव नहीं है। मिल ने अपनी रचना On Liberty में स्वतंत्रता की वकालत की है और इसके अलग-अलग प्रकार बताएँ हैं।

Date 15/09/23

Date 21/09/23

जे॰ एस मिल का स्वतंत्रता पर विचार

Page No: ....
Date: ../../....

जे॰ एस मिल अपनी प्रसिद्ध रचना में On Liberty में स्वतंत्रता के विचार को रखते हैं। उनके अनुसार राज्य का कार्य क्षेत्र बढ़ चुका है। यह अधिक कानून से अधिक कानून बनाकर लोगों के जीवन में हस्तक्षेप करने लगा है और इसलिए जरूरी है कि यह निर्धारित किया जाए कि व्यक्ति बड़ा या राज्य। राज्य और व्यक्ति में कौन साध्य है और कौन साधन।

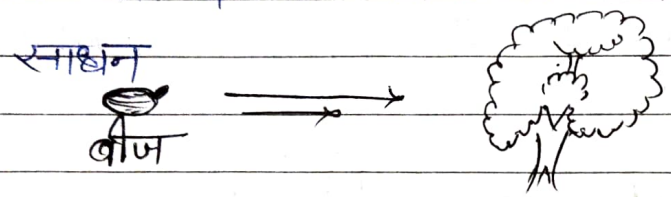

अब यह चर्चा का विषय बन गया है कि लोगों के जीवन में क्या राज्य का हस्तक्षेप करना उचित है। यदि हाँ तो कितना और क्यों? इसी प्रश्न का उत्तर देने के लिए जे॰ एस मिल दो प्रकार की स्वतंत्रता की बात करते हैं।

(i) कार्य करने की स्वतंत्रता (Freedom to Action)

(ii) भाषण एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता

1. **कार्य करने की स्वतंत्रता** :— मिल के अनुसार स्वतंत्रता के बिना व्यक्ति का जीवन अधूरा है, क्योंकि स्वतंत्रता के अभाव में व्यक्ति का संपूर्ण विकास असंभव है।

मिल कार्य करने की स्वतंत्रता का समर्थन करते हैं। उनके अनुसार किसी भी व्यक्ति का कार्य दो प्रकार का हो सकता है।

(i) स्वसंबंधी कार्य (Self-Regarding Action)

(ii) परसंबंधी कार्य (Others Regarding Action)

(i) स्वसंबंधी कार्य :— मिल लिखते हैं कि व्यक्ति के स्वसंबंधी कार्य में राज्य को एवं समाज को हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं है। इस क्षेत्र में व्यक्ति पूरी तरह स्वयत्ता / स्वायत्तता है। व्यक्ति ऐसा कोई भी कार्य करे जिससे कि समाज को कष्ट नहीं पहुँचता है तो इसमें उसे राज्य के द्वारा नहीं रोका जाना चाहिए। उदाहरण के लिए कोई व्यक्ति धीमी आवाज में संगीत सुनता है, जिससे कि उसके आस-पास किसी भी को भी कष्ट नहीं पहुँचे, तो वैसे में उसकी स्वतंत्रता को राज्य को उसका पूरा सम्मान करना पड़ेगा।

(ii) परसंबंधी कार्य (Others Regarding Action) :— जिस कार्य को करने से समाज के लोगों को तकलीफ या क्षति पहुँचे उसे परसंबंधी कार्य कहते हैं। इस कार्य को करने से व्यक्ति को रोका जाना चाहिए क्योंकि इससे समाज को जाहिर क्षति पहुँचती है। उदाहरण के लिए यदि कोई व्यक्ति नशे में की हालत में सड़क पर गाड़ी चलाता है तो उसे सरकार के द्वारा रोका जा सकता है। वह व्यक्ति यह नहीं कह सकता कि उसके स्वतंत्रता का हनन हो रहा है, क्योंकि उसे ऐसा करने से आम लोगों को सड़क दुर्घटना का शिकार बनना पड़ सकता है।

निष्कर्ष :— J.S मिल स्वतंत्रता के पुजारी थे। उन्होंने स्वतंत्रता को व्यक्तित्व के विकास के लिए परम आवश्यक माना हालांकि स्वतंत्रता असीमित नहीं दी जा सकती, उसके पीछे कुछ तर्क संगत प्रतिबंध भी लगाए जा सकते हैं। J.S मिल कहते हैं कि यदि किसी कार्य को करने से

समाज को नुकशान पहुँचे तो व्यक्ति की स्वतंत्रता पर रोक लगाई जा सकती है।

2. भाषण एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता :— J.S मिल का तर्क था कि हर व्यक्ति को बोलने एवं स्वंय को अभिव्यक्ति अभिव्यक्त करने की पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त होनी चाहिए उन्होंने यह भी कहा कि यदि कोई व्यक्ति गलत भी बोलता है तो उसे बोलने से नहीं रोका जाना चाहिए। यदि उसे रोका जाता है तो फिर समाज का ही बुरा होगा क्योंकि कोई भी व्यक्ति यह दावा नहीं कर सकता कि वह जो जानता है वही संपूर्ण सत्य है। उदाहरण के लिए सुकरात एवं ईशामसीह को मृत्युदंड दिया गया था शासक वर्ग द्वारा। बाद में चलकर ~~समाज~~ समाज को यह ज्ञात हुआ कि यह मानव जाति का क्षति है।

Q. J.S मिल द्वारा प्रतिपादित स्वतंत्रता के विचार को हम किस प्रकार आलोचना कर सकते है?

J.S मिल द्वारा प्रतिपादित स्वतंत्रता के विचार की आलोचना हम निम्नलिखित रूपों में कर सकते है:-

(i) खोखली और नाकारात्मक स्वतंत्रता :— बार्कर ने मिल को "खोखली स्वतंत्रता का पैगंबर" कहा है। उसके पास अधिकारो के संबंध में कोई स्पष्ट दर्शन नहीं था। मिल ने बंधनों के अभाव को स्वतंत्रता का नाम दिया है। दूसरी तरफ वह राज्य के हस्तक्षेप का भी समर्थन करता है।

(ii) अधिकारों का अभाव :- मिल ने केवल स्वतंत्रता पर ज़ोर दिया है, लेकिन अधिकारों की उपेक्षा की है। स्वतंत्रता के अर्थपूर्ण प्रयोग के लिए अधिकारों का होना आवश्यक है। स्वतंत्रता और अधिकार एक दूसरे के पूरक हैं। एक के अभाव में दूसरे का कोई अस्तित्व नहीं। अधिकारों के अभाव में व्यक्ति अपनी स्वतंत्रता का उपभोग नहीं कर सकता।

(iii) सनकि व्यक्तियों की स्वतंत्रता का पक्षधर :- विचार तथा भाषण की निरपेक्ष स्वतंत्रता का तर्क भी गलत है। यदि विचार की स्वतंत्रता पर कोई प्रतिबंध नहीं होगा तो समाज की दशा अस्त-व्यस्त हो जाएगी और किसी भी सर्वमान्य निर्णय तक पहुँचना बड़ा मुश्किल हो जाएगा।

(iv) समानता का अभाव :- मिल ने स्वतंत्रता पर तो ज़ोर दिया है, लेकिन समानता आवश्यक है। इसके अभाव में स्वतंत्रता का स्थायित्व प्रदान नहीं किया जा सकता।

(v) सीमित दृष्टिकोण :- मिल ने पिछड़े वर्ग, बच्चों, एवं मानसिक रूप से विकलांग व्यक्तियों को अपनी स्वतंत्रता की परिधि की से बाहर रखा है। ऐसा करने से इनके विकास का मार्ग रुक जाएगा और समाज की आम धारा से कट जाएंगे।

Date 03/10/23

प्रतिनिधि सरकार (Representative Government)

J.S मिल लोकतंत्र के समर्थक थे। उन्होंने इस बात को स्वीकार किया है कि आधुनिक समय में लोगों के पास समय एवं विद्वता की कमी है। दूसरा लोगों की जनसंख्या भी बहुत अधिक बढ़ चुकी है। इस कारण प्रत्यक्ष लोकतंत्र (जहाँ पर कि निर्णय निर्माण में समुदाय का हर एक व्यक्ति भागीदारी करता है, वर्तमान समय में अप्रासंगिक हो चुका है।

उपरोक्त कारणों से आज की परिस्थितियों के अनुसार प्रतिनिधि शासन ही सर्वोत्तम है। यहाँ लोग अपने प्रतिनिधि को चुनेंगे। उन्हीं में से कुछ लोग शासन की ~~जिम्मेद~~ जिम्मेदारी को संभालेंगे और बाकि लोग विपक्ष की भूमिका अदा करेंगे। विपक्ष का कार्य होगा सरकार से प्रश्न ~~पूछ~~ पूछना एवं गलतियाँ करने पर उसकी आलोचना करना।

यद्यपि J.S मिल लोकतंत्र के समर्थक थे लेकिन वे मानते थे कि लोकतंत्र हर देश के लिए उपयुक्त नहीं है यह केवल उन्हीं देशों में सफल हो सकता है जहाँ के लोग शिक्षित एवं विद्वान हो। यदि परिस्थितियाँ लोकतंत्र के अनुकूल न हो तो लोकतंत्र का पतन भीड़तंत्र हो जायगा। बहुत से ऐसे लोग जिन्हें राजनीति का ज्ञान नहीं, वे भी सरकार में भागीदारी करेंगे। मिल ब्रिटिश उपनिवेशवाद को सही ठहराते हैं, क्योंकि वे मानते थे कि कुछ देश अभी पूर्ण विकसित नहीं हुए हैं और वहाँ की बड़ी आबादी शासन करने में सक्षम नहीं है।

Date 04/10/23

Page No:
Date: / /

J.S मिल सभी को समान मताधिकार प्रदान करने के पक्ष में नहीं थे। उनके अनुसार जो शिक्षित लोग हैं एवं संपत्ति वाले लोग हैं उनके वोट का मूल्य एक से अधिक होना चाहिए। जो आम नागरिक हैं एवं जो संपत्ति वाले लोग हैं, उनके वोट का मूल्य अलग-अलग होने चाहिए। यदि ऐसा नहीं हुआ तो अशिक्षित एवं संपत्ति विहिन लोग गलत प्रतिनिधि का चयन कर लेंगे। ऐसे में लोकतंत्र भीड़ तंत्र में परिवर्तित हो जाएगी।

मिल यह कहते हैं कि जिन लोगों का संपत्ति एक से अधिक स्थानों पर है उन्हें उन सभी जगहों से वोट डालने का अधिकार प्राप्त होना चाहिए। इसके पीछे कारण है कि संपत्ति वाले लोग अधिक tax (कर) भरते हैं। उनका राजस्व में अधिक योगदान है।

मिल महिला मताधिकार का भी समर्थन करते हैं उनके समय में केवल पुरुषों को ही वोट डालने का अधिकार प्राप्त था।

J.S मिल संसद के उच्च सदन यानि कि लॉर्ड सभा (House of Lords) को एक जरूरी संस्था मानते हैं। इसके पीछे उनका तर्क था कि जो निम्न सदन है वो कई बार जल्दबाजी में गलत निर्णय ले लेता है। तो इसलिए आवश्यक है कि निम्न सदन का मार्गदर्शन करने के लिए एवं गलत निर्णय को सुधारने के लिए एक ऐसी संस्था हो जहाँ पर अनुभवी व्यक्ति बैठे। ये अनुभवी लोग उच्च सदन के सदस्य होंगे। इनमें से कोई सेवानिवृत न्यायधीश होगा, सेवानिवृत सेना अधिपति होगा तो कोई सेवानिवृत प्रशासक होगा।

मिल आनुपातिक प्रतिनिधित्व का समर्थन करते हैं। इससे लाभ यह होगा कि सभी दलों को विधायिका में प्रतिनिधित्व प्राप्त होगा।

आनुपातिक प्रतिनिधित्व :— जिसे जितना वोट मिलेगा उसे उतना ही सीट मिले।

टी॰ एच ग्रीन (1836) यार्कशायर, इंग्लैंड

थॉमस हिल ग्रीन का जन्म सन् 1836 ई॰ को इंग्लैंड के यार्कशायर में हुआ था। इनके पिता चर्च के पादरी थे। इन्होंने उदारवाद को आदर्शवाद के साथ जोड़ा एवं नैतिक मूल्यों को अपने चिंतन में स्थान दिया।

स्वतंत्रता (Liberty)

- **नाकारात्मक** (बंधनों का अभाव)
- **साकारात्मक** (व्यक्तित्व के विकास हेतु अवसरों की उपलब्धता)

उदारवाद

नाकारात्मक

(i) व्यक्ति तार्किक है, बुद्धिमान है इसलिए राज्य को व्यक्ति के मामले में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।

(ii) न्यूनतम हस्तक्षेपकारी राज्य (आवश्यक बुराई)

(iii) पुलिस राज्य (राज्य का कार्य सिर्फ कानून व्यवस्था बनाए रखना है)

साकारात्मक

(i) राज्य एक हितकारी संस्था है

(ii) कल्याणकारी संस्था है

टी॰ एच॰ ग्रीन नाकारात्मक स्वतंत्रता के विरोधी थे। उन्होंने स्वतंत्रता के साकारात्मक पक्ष का समर्थन किया। उनके अनुसार स्वतंत्रता का वास्तविक अर्थ

व्यक्तित्व के विकास हेतु अवसरों की उपलब्धता है (सकारात्मक स्वतंत्रता)।

उन्होंने 17वीं एवं 18वीं शताब्दी में प्रचलित नकारात्मक उदारवाद का खंडन किया। नकारात्मक उदारवाद राज्य को एक आवश्यक बुराई के रूप में देखता है। इसके अनुसार राज्य का व्यक्तियों के जीवन में कम से कम हस्तक्षेप होना चाहिए क्योंकि लोग बुद्धिमान हैं और वे अपना हित स्वयं जानते हैं। राज्य का कार्य मात्र कानून व्यवस्था देखना है (पुलिस राज्य)। राज्य को लोगों के आर्थिक मामलों में एवं उत्पादन की प्रक्रिया में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए (Laissez faire State).